

चौबीस तीर्थकरों के अर्ध्य

१. श्री ऋषभनाथ भगवान का अर्ध्य
(ताटंक)

शुचि निरमल नीरं गंध सुअक्षत, पुष्प चरु ले मन हरषाय।
दीप धूप फल अर्ध्य सु लेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय॥
श्री आदिनाथ के चरण कमल पर, बलि-बलि जाऊँ मन-वच-काय।
हे करुणानिधि! भव-दुख मेटो, यातैं मैं पूजूँ प्रभु पाय॥
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्ध्य निर्वपामीति स्वाहा।

२. श्री अजितनाथ भगवान का अर्ध्य
(त्रिभंगी)

जल-फल सब सज्जै, बाजत बज्जै, गुनगन रज्जै मन मज्जै।
तुम पद जुगमज्जै, सज्जन जज्जै, ते भव भज्जै निजकज्जै॥
श्री अजित जिनेशं, नुतनक्रेशं, चक्रधरेशं खगेशं।
मनवांछित दाता, त्रिभुवनत्राता, पूजों ख्याता जगेशं॥
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्ध्य निर्वपामीति स्वाहा।

३. श्री संभवनाथ भगवान का अर्ध्य
(चौबोला)

जल चंदन तंदुल प्रसून चरु, दीप धूप फल अर्ध्य किया।
तुमको अरपों भावभगति धर, जै जै जै शिवरमनि पिया॥
संभवजिन के चरन चरचतैं, सब आकुलता मिट जावै।
निज निधि ज्ञान-दरश-सुख-वीरज, निराबाध भविजन पावै॥
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्ध्य निर्वपामीति स्वाहा।

४. श्री अभिनन्दननाथ भगवान का अर्ध्य
(हरिगीतिका)

अष्ट द्रव्य सँवारि सुन्दर, सुजस गाय रसाल ही।
नचत रचत जजों चरन जुग, नाय नाय सुभाल ही॥
कलुषताप निकन्द श्री अभिनन्द, अनुपम चन्द है।
पदवंद वृन्द जजे प्रभु भवदन्द-फन्द निकन्द है॥
ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्ध्य निर्वपामीति स्वाहा।

५. श्री सुमतिनाथ भगवान का अर्थ

(कवित)

जल चंदन तन्दुल प्रसून चरु, दीप धूप फल सकल मिलाय ।
 नाचि राचि शिरनाय समरचों, जय जय जय जय जय जिनराय ॥
 हरिहर वंदित पापनिकंदित, सुमतिनाथ त्रिभुवन के राय ।
 तुम पदपद्म सद्यशिवदायक, जजत मुदित मन उदित सुभाय ॥
 ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय अनर्थपदप्राप्तये अर्थं निर्वपामीति स्वाहा ।

६. श्री पद्मप्रभ भगवान का अर्थ

(चाल होली)

जल फल आदि मिलाय गाय गुन, भगति भाव उमगाय ।
 जजों तुमहिं शिवतियवर जिनवर, आवागमन मिटाय ॥
 मन-वच-तन त्रय धार देत ही, जनम जरा मृत जाय ।
 पूजों भावसों, श्री पदमनाथ पद सार, पूजों भावसों ॥
 ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय अनर्थपदप्राप्तये अर्थं निर्वपामीति स्वाहा ।

७. श्री सुपाश्वर्नाथ भगवान का अर्थ

(चौपाई आँचलीबद्ध)

आठों दरब साजि गुनगाय, नाचत राचत भगति बढ़ाय ।
 दयानिधि हो, जय जगबन्धु दयानिधि हो ॥
 तुम पद पूजों मन-वच-काय, देव सुपारस शिवपुराय ।
 दयानिधि हो, जय जगबन्धु दयानिधि हो ॥
 ॐ ह्रीं श्री सुपाश्वर्नाथजिनेन्द्राय अनर्थपदप्राप्तये अर्थं निर्वपामीति स्वाहा ।

८. श्री चन्द्रप्रभ भगवान का अर्थ

(अवतार)

सजि आठों दरब पुनीत, आठों अंग नमों ।
 पूजों अष्टम जिन मीत, अष्टम अवनि गमों ॥
 श्री चंदनाथ दुति चंद, चरनन चंद लगै,
 मन-वच-तन जजत अमंद, आतमजोति जगै ॥
 ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्थपदप्राप्तये अर्थं निर्वपामीति स्वाहा ।

९. श्री पुष्पदन्त भगवान का अर्थ

(चाल होली)

जल फल सकल मिलाय मनोहर, मन-वच-तन हुलसाय ।

तुम पद पूजौं प्रीति लायकै, जय जय त्रिभुवनराय ॥

मेरी अरज सुनीजे, पुष्पदन्त जिनराय ॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंतजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

१०. श्री शीतलनाथ भगवान का अर्थ

(वसंततिलका)

कं श्रीफलादि^१ वसु प्रासुक द्रव्य साजै ।

नाचे रचे मचत बज्जत सज्ज बाजै ॥

रागादि दोष मलमर्दन हेतु येवा ।

चर्चों पदाब्ज तव शीतलनाथ देवा ॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

११. श्री श्रेयांसनाथ भगवान का अर्थ

(हरिगीता)

जल मलय तंदुल सुमन चरु अरु दीप धूप फलावली ।

करि अर्घ्य चर्चों चरनजुग प्रभु मोहि तार उतावली ॥

श्रेयांसनाथ जिनन्द त्रिभुवनवन्द आनन्दकन्द हैं ।

दुख दन्द-फन्द निकन्द पूरनचन्द जोति अमन्द हैं ॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

१२. श्री वासुपूज्य भगवान का अर्थ

(जोगीरासा)

जल-फल दरब लिलाय गाय गुन, आठों अंग नमाई ।

शिवपदराज हेत हे श्रीपति! निकट धरों यह लाई ॥

वासुपूज वसुपूज तनुज पद, वासव सेवत आई ।

बालब्रह्मचारी लखि जिनको, शिवतिय सनमुख धाई ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

1. जल

१३. श्री विमलनाथ भगवान का अर्घ्य
(सोरठा)

आठों दरब सँवार, मन-सुखदायक पावने ।
जजों अर्घ्य भर थार, विमल विमल शिवतिय रमन ॥
ॐ हीं श्री विमलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

१४. श्री अनन्तनाथ भगवान का अर्घ्य
(हरिगीता)

शुचि नीर चन्दन शालिशंदन, सुमन चरु दीवा धरों ।
अरु धूप फल जुत अरघ करि, कर जोर जुग विनती करों ॥
जगपूज परमपुनीत मीत, अनन्त संत सुहावनों ।
शिवकंतवंत महंत ध्यावो, भ्रन्तवन्त नशावनों ॥
ॐ हीं श्री अनन्तनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

१५. श्री धर्मनाथ भगवान का अर्घ्य
(जोगीरासा)

आठों दरब साज शुचि चितहर, हरषि हरषि गुन गाई ।
बाजत दृम दृम दृम मृदंग गत, नाचत ता थेर्इ थाई ॥
परम धरम-शम-रमन धरम-जिन, अशरन शरन निहारी ।
पूजूँ पाय गाय गुन सुन्दर, नाचौं दै दै तारी ॥
ॐ हीं श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

१६. श्री शान्तिनाथ भगवान का अर्घ्य
(त्रिभंगी)

वसु द्रव्य सँवारी, तुम ढिंग धारी, आनन्दकारी दृग प्यारी ।
तुम हो भवतारी, करुनाधारी, यातैं थारी शरनारी ।
श्री शान्तिजिनेशं, नुतशक्रेशं, वृषचक्रेशं चक्रेशं ।
हनि अरिचक्रेशं, हे गुनधेशं दयामृतेशं मक्रेशं ॥
ॐ हीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

१७. श्री कुन्थुनाथ भगवान का अर्घ्य
(चाल लावनी)

जल चन्दन तन्दुल प्रसून चरु, दीप धूप लेरी ।
फलजुत जजन करों मन सुख धरी, हरो जगत फेरी ॥

कुन्थु सुन अरज दास केरी, नाथ सुनि अरज दास केरी ।

भवसिन्धु पर्यो हों नाथ, निकारो बाँह पकर मेरी ॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

१८. श्री अरनाथ भगवान का अर्घ्य

(त्रिभंगी)

सुचि स्वच्छ पटीरं, गंधगहीरं, तंदुलशीरं पुष्प चर्सु ।

वर दीपं धूपं, आनन्दरूपं, लै फल भूपं अर्घ्यं कर्सु ॥

प्रभु दीनदयालं, अरिकुलकालं, विरदविशालं सुकुमालम् ।

हनि मम जंजालं, हे जगपालं, अनगुनमालं वरभालम् ॥

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

१९. श्री मल्लिनाथ भगवान का अर्घ्य

(जोगीरासा)

जल फल अरघ मिलाय गाय गुन पूजौं भगति बढ़ाई ।

शिवपदराज हेत हे श्रीधर, शरन गही मैं आई ॥

राग-दोष मद मोह हरन को, तुम ही है वरवीरा ।

यातैं शरन गही जगपतिजी, वेग हरो भवपीरा ॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

२०. श्री मुनिसुब्रतनाथ भगवान का अर्घ्य

(गीतिका)

जल गंध आदि मिलाय आठों, दरब अरघ सजों वरों ।

पूजौं चरन-रज भगत जुत, जातैं जगत सागर तरों ॥

शिवसाथ करत सनाथ सुब्रतनाथ मुनि गुनमाल है ।

तसु चरन आनन्दभरन तारन, तरन विरद विशाल है ॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुब्रतनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

२१. श्री नमिनाथ भगवान का अर्घ्य

जल फलादि मिलाय मनोहरं, अरघ धारत ही भय भौ हरं ।

जजतु हौं नमि के गुन गायकें, जुगपदांबुज प्रीति लगायकें ॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

२२. श्री नेमिनाथ भगवान का अर्थ

(चाल होली)

जल-फल आदि साज शुचि लीने, आठों दरब लिलाय ।

अष्टमथिति के राजकरन कों, जजों अंग वसु नाय ॥

दाता मोक्ष के, श्री नेमिनाथ जिनराय, दाता मोक्ष के ॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्थं निर्वपामीति स्वाहा ।

२३. श्री पाश्वनाथ भगवान का अर्थ

नीर गन्ध अक्षतान् पुष्प चरु लीजिए ।

दीप-धूप-श्रीफलादि अर्थं तैं जजीजिये ॥

पाश्वनाथ देव सेव आपकी करुँ सदा ।

दीजिए निवास मोक्ष, भूलिए नहीं कदा ॥

ॐ ह्रीं श्री पाश्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्थं निर्वपामीति स्वाहा ।

२४. श्री महावीर भगवान का अर्थ

(अवतार)

(१) जल-फल वसु सजि हिमथार, तन-मन मोद धरों ।

गुण गाऊँ भवदधि तार, पूजत पाप हरों ॥

श्री वीर महा अतिवीर, सन्मतिनायक हो ।

जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मतिदायक हो ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्थं निर्वपामीति स्वाहा ।

(हरिगीत)

(२) इस अर्थ का क्या मूल्य है अन्-अर्थ पद के सामने ।

उस परम पद को पा लिया, हे पतित-पावन ! आपने ॥

सन्तस मानस शान्त हों, जिनके गुणों के गान में ।

वे वर्धमान महान जिन, विचरें हमारे ध्यान में ॥

ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमानजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्थं निर्वपामीति स्वाहा ।

कृत्रिम व अकृत्रिम चैत्यालयों के अर्ध (हिन्दी)

भूत भविष्यत् वर्तमान की तीस चौबीसी मैं ध्याऊँ ।
चैत्य चैत्यालय कृत्रिमाकृत्रिम, तीन लोक के मन लाऊँ ॥
ॐ ह्रीं त्रैलोक्य सम्बन्धी तीस चौबीसी, त्रिलोक सम्बन्धी कृत्रिमाकृत्रिम
चैत्याचैत्यालयेभ्य अर्थ्य नि.

वसुकोटि छप्पन लाख ऊपर, सहस सत्याणव मानिये ।
शतच्चार पै गिनले इक्यासी, भवन जिनवर जानिये ॥
तिहुँलोक भीतर सासते, सुर असुर नर पूजा करें ।
तिन भवन को हम अर्ध लेकै, पूजि है जग दुःख है ॥
ॐ ह्रीं त्रैलोक्य सम्बन्ध्यष्टकोटि-षट्पंचाशल्लक्ष-समनवतिसहस्र चतु
शतैकाशीति अकृत्रिम-जिन चैत्यालयेभ्यो पूर्णार्थ्य नि. ॥४॥

चैत्य भक्ति आलोचना चाहुँ, कायोत्सर्ग अघ नासन हेत ।
कृत्रिमाकृत्रिम तीन लोक में, राजत हैं जिन बिंब अनेक ॥
चतुर्निकाय के देव जजैं, ले अष्ट द्रव्य निज कुटुम्ब समेत ।
निज शक्ति अनुसार जजूँ मैं, कर समाधि पाऊँ शिवखेत ॥

पुष्पांजलि क्षेपण

पूर्व मध्य अपरान्ह की बेला, पूर्वाचार्यों के अनुसार ।
देव वन्दना करूँ भाव से, सकल कर्म की नासनहार ॥
पंच महा गुरु सुमिरन करके, कायोत्सर्ग करूँ सुखकार ।
सहज स्वभाव शुद्ध लख अपना, जाऊँगा मैं अब भव पार ॥

(कायोत्सर्ग पूर्वक नौ बार णमोकार मंत्र की जाप्य करें।)

दरबार तुम्हारा मनहर है, प्रभु दर्शन कर हर्षये हैं।
दरबार तुम्हारे आये हैं, दरबार तुम्हारे आये हैं।।ठेक ॥

भक्ति करेंगे चित से तुम्हारी, तृप्त भी होगी चाह हमारी।
भाव रहें नित उत्तम ऐसे, घट के पट में लाये हैं।।दरबार. ॥१॥

जिसने चिंतन किया तुम्हारा, मिला उसे संतोष सहारा।
शरणे जो भी आये हैं, निज आतम को लख पाये हैं।।दरबार. ॥२॥

विनय यही है प्रभू हमारी, आतम की महके फुलवारी।
अनुगामी हो तुम पद पावन, 'वृद्धि' चरण सिर नाये हैं।।दरबार. ॥३॥

अकृत्रिम चैत्यालयों के अर्थ

(शार्दूलविक्रीडित)

कृत्रिमाकृत्रिम-चारु-चैत्य-निलयान् नित्यं त्रिलोकी-गतान्,
 वंदे भावनव्यंतर-द्युतिवरान् स्वर्गमरावासगान् ।
 सद्गंधाक्षत-पुष्प-दाम-चरुकैः सद्वीपधूपैः फलै-
 द्रव्यैनीरमुखैर्यजामि सततं दुष्कर्मणां शांतये ॥१॥
 ॐ हौं कृत्रिमाकृत्रिम-चैत्यालयसंबंधि-जिनविम्बेभ्योऽर्थं निर्वपामीति स्वाहा ।

(उपजाति)

वर्षेषु-वर्षान्तर-पर्वतेषु नन्दीश्वरे यानि च मंदरेषु ।
 यावंति चैत्यायतनानि लोके सर्वाणि वंदे जिनपुंगवानाम् ॥२॥

(मालिनी)

अवनि-तल-गतानां कृत्रिमाकृत्रिमाणां,
 वन-भवन-गतानां दिव्य-वैमानिकानां ।
 इह मनुज-कृतानां देवराजार्चितानां,
 जिनवर-निलयानां भावतोऽहं स्मरामि ॥३॥

(शार्दूलविक्रीडित)

जंबू-धातकि-पुष्करार्ध-वसुधा-क्षेत्र त्रये ये भवा-
 श्चन्द्रांभोज-शिखंडि-कण्ठ-कनक-प्रावृद्धनाभा जिनाः ।
 सम्यग्ज्ञान-चरित्र-लक्षणधरा दग्धाष्ट-कर्मन्धनाः,
 भूतानागत-वर्तमान-समये तेभ्यो जिनेभ्यो नमः ॥४॥

(स्नाधरा)

श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रजत-गिरिवरे शाल्मलौ जंबुवृक्षे,
 वक्षारे चैत्यवृक्षे रतिकर-रुचिके कुंडले मानुषांके ।
 इष्वाकारे जनाद्रौ दधि-मुख-शिखरे व्यन्तरे स्वर्गलोके,
 ज्योतिर्लोकेभिवंदे भवन-महितले यानि चैत्यालयानि ॥५॥

(शार्दूलविक्रीडित)

द्वौ कुंदेंदु-तुषार-हार-धवलौ द्वाविन्द्रनील-प्रभौ,
 द्वौ बंधूक-सम-प्रभौ जिनवृष्टौ द्वौ च प्रियंगुप्रभौ ।
 शेषाः षोडश जन्म-मृत्यु-रहिताः संतप्त-हेम-प्रभाः,
 ते संज्ञान-दिवाकराः सुरनुताः सिद्धिं प्रयच्छंतु नः ॥६॥

ॐ हौं त्रिलोकसंबंधि-कृत्रिमाकृत्रिम चैत्यालयेभ्योऽर्थं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्ध्यावलि

देव-शास्त्र-गुरु का अर्थ
(गीता)

(१) जल परम उज्ज्वल गंध अक्षत, पुष्प चरु दीपक धरूँ ।
वर धूप निरमल फल विविध बहु, जन्म के पातक हरूँ ॥
इह भाँति अर्द्य चढ़ाय नित भवि, करत शिव पंकति मचूँ ।
अरहंत श्रुत सिद्धान्त गुरु, निर्गन्थ नित पूजा रचूँ ॥
(दोहा)

वसु विधि अर्द्य संजोयकै, अति उछाह मन कीन ।
जासों पूजों परम पद, देव-शास्त्र-गुरु तीन ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्द्यपदप्राप्तये अर्द्य निर्वपामीति स्वाहा ।

(२) क्षण भर निजरस को पी चेतन मिथ्यामल को धो देता है ।
काषायिक भाव विनष्ट किये, निज आनन्द अमृत पीता है ॥
अनुपम सुख तब विलसित होता, केवल-रवि जग-मग करता है ।
र्दर्शन-बल पूर्ण प्रकट होता, यह ही अरहंत अवस्था है ॥
यह अर्द्य समर्पण करके प्रभु, निज गुण का अर्द्य बनाऊँगा ।
और निश्चित तेरे सदृश प्रभु, अरहन्त अवस्था पाऊँगा ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्द्यपदप्राप्तये अर्द्य निर्वपामीति स्वाहा ।

(३) बहुमूल्य जगत का वैभव यह, क्या हमको सुखी बना सकता ।
अरे पूर्णता पाने में, इसकी क्या है आवश्यकता ॥
मैं स्वयं पूर्ण हूँ अपने में, प्रभु है अनर्द्य मेरी माया ।
बहुमूल्य द्रव्यमय अर्द्य लिये, अर्पण के हेतु चला आया ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्द्यपदप्राप्तये अर्द्य निर्वपामीति स्वाहा ।

पंचपरमेष्ठी का अर्द्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प दीप, नैवेद्य धूप फल लाया हूँ ।
अब तक के संचित कर्मों का, मैं पुंज जलाने आया हूँ ॥
यह अर्द्य समर्पित करता हूँ, अविचल अनर्द्य पद दो स्वामी ।
हे पंच परम परमेष्ठी प्रभु, भव दुःख मेटो अन्तर्यामी ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो अनर्द्यपदप्राप्तये अर्द्य निर्वपामीति स्वाहा ।

सिद्धपरमेष्ठी का अर्थ (संस्कृत)

(वसन्ततिलका)

ज्ञानोपयोगविमलं विशदात्मरूपं,
सूक्ष्मस्वभावपरमं यदनन्तवीर्यम् ।
कर्मैघकक्षदहनं सुखसस्य बीजं,
वन्दे सदा निरुपमं वर सिद्धचक्रम् ॥

(अनुष्टुप्)

कर्मष्टक-विनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मी-निकेतनम् ।
सम्यक्त्वादि-गृणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहम् ॥

ॐ हीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्थपदप्राप्तये अर्थं निर्वपामीति स्वाहा ।

सिद्धपरमेष्ठी का अर्थ (हिन्दी)

जल पिया और चन्दन चरचा, मालायें सुरभित सुमनों की।
पहनीं, तन्दुल सेये व्यंजन, दीपावलियाँ की रत्नों की॥
सुरभि धूपायन की फैली, शुभ कर्मों का सब फल पाया।
आकुलता फिर भी बनी रही, क्या कारण जान नहीं पाया॥
जब दृष्टि पड़ी प्रभुजी तुम पर, मुझ को स्वभाव का भान हुआ।
सुख नहीं विषय-भोगों में है, तुमको लख यह सद्गऽनान हुआ॥
जल से फल तक का वैभव यह, मैं आज त्यागने हूँ आया।
होकर निराश सब जग भर से, अब सिद्ध शरण में मैं आया॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्थपदप्राप्तये अर्थं निर्वपामीति स्वाहा ।

चौबीस तीर्थकर का अध्य

जीवन में अभिलाषायें तज, शुद्धभाव धारण करलें।
 और अर्घ्य यह अर्पण करके हम, अनर्घ्यपद प्राप्त करें॥
 ऋषभदेव से वीरप्रभु तक, श्री तीर्थकरदेव महान।
 अति विनम्र हो हम करते हैं, उनकी महिमा का गृणगान ॥

ॐ हीं वृषभादिमहावीरपर्यत् चतुर्विंशतितीर्थकर् जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तयेऽर्घ्यं नि. स्वाहा ।

चौबीस तीर्थकर का अर्ध्य

जल फल आठों शुचिसार, ताको अर्घ्य करों ।
तुमको अरपों भवतार, भव तरि मोक्ष वरों ॥
चौबीसों श्री जिनचन्द, आनन्द कन्द सही ।
पद जजत हरत भव-फन्द, पावत मोक्ष मही ॥
ॐ हीं श्री वृषभादिवीरांतेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।
समुच्चय पूजन का अर्घ्य

अष्टम वसुधा पाने को, कर में ये आठों द्रव्य लिये ।

सहज शुद्ध स्वाभाविकता से, निज में निज गुण प्रकट किये ॥

यह अर्घ्य समर्पण करके मैं, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ ।

विद्यमान श्री बीस तीर्थकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ ॥

ॐ हीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थकरेभ्यो अनन्तानन्त-
सिद्धपरमेष्ठिभ्यश्च अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

विदेहक्षेत्र में विद्यमान बीस तीर्थकरों का अर्घ्य

जल फल आठों दर्व, अरघ कर प्रीति धरी है ।

गणधर इन्द्रनि हू तैं, थुति पूरी न करी है ॥

‘द्यानत’ सेवक जानके, (हो) जगतैं लेहु निकार ।

सीमंधर जिन आदि दे, (स्वामी) बीस विदेह मङ्झार ॥

श्री जिनराज हो, भव तारणतरण जिहाज, श्री महाराज हो ॥

ॐ हीं श्री सीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थकरेभ्यो अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

सीमंधर भगवान का अर्घ्य

निर्मल जल-सा प्रभु निज स्वरूप, पहचान उसी में लीन हुए ।

भव-ताप उतरने लगा तभी, चन्दन-सी उठी हिलोर हिये ॥

अभिराम-भवन प्रभु अक्षत का, सब शक्ति-प्रसून लगे खिलने ।

क्षुत्-तृष्णा अठारह दोष क्षीण, कैवल्य प्रदीप लगा जलने ॥

मिट चली चपलता योगों की, कर्मों के ईंधन ध्वस्त हुए ।

फल हुआ प्रभो ! ऐमा मधुरिम, तुम ध्वल निरंजन स्वस्थ हुए ॥

ॐ हीं श्री सीमंधरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

महावीर भगवान का अर्थ

इस अर्थ का क्या मूल्य है अन्-अर्थ पद के सामने ?
उस परम-पद को पा लिया, हे पतित-पावन आपने ॥
संतस-मानस शान्त हों, जिनके गुणों के गान में ।
वे वर्द्धमान महान जिन विचरें हमारे ध्यान में ॥
ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमानजिनेन्द्राय अनर्थपदप्राप्तये अर्थं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंच-बालयति का अर्थ

सजि वसुविधि द्रव्य मनोज्ञ, अर्थ बनावत हैं ।
वसुकर्म अनादि संयोग, ताहि नसावत हैं ॥
श्री वासु पूज्य-मल्लि-नेमि, पारस वीर अति ।
नमूँ मन-वच-तन धरि प्रेम, पाँचों बालयति ॥
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य-मल्लिनाथ-नेमिनाथ-पाश्वर्नाथ-महावीर-पंचबालयति-
तीर्थकरेभ्यो अनर्थपदप्राप्तये अर्थं निर्वपामीति स्वाहा ।

नन्दीश्वर द्वीप का अर्थ

यह अरघ कियो निज हेत, तुमको अरपतु हों ।
'द्यानत' कीनो शिवखेत, भूमि समरपतु हों ॥
नन्दीश्वर श्री जिनधाम, बावन पुंज करों ।
वसुदिन प्रतिमा अभिराम, आनन्द भाव धरों ॥
ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणे द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो
अनर्थपदप्राप्तये अर्थं निर्वपामीति स्वाहा ।

दशलक्षण धर्म का अर्थ

(सोरठा)

आठों दरव सँवार, 'द्यानत' अधिक उछाह सों ।
भव-आताप निवार, दशलक्षण पूजों सदा ॥
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्मागाय अनर्थपदप्राप्तये अर्थं निर्वपामीति स्वाहा ।

रत्नत्रय का अध्य

(सोरठा)

आठों दरव निरधार, उत्तम सों उत्तम लिये ।
 जनम रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ ॥
 ॐ हीं सम्यक्-रत्नत्रयाय अनर्थपदप्राप्तये अध्य निर्वपामीति स्वाहा ।

सम्यगदर्शन का अध्य

(सोरठा)

जल गंधाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु ।
 सम्यगदर्शन सार, आठ अंग पूजों सदा ॥
 ॐ हीं अष्टांगसम्यगदर्शनाय अनर्थपदप्राप्तये अध्य निर्वपामीति स्वाहा ।

सम्यगज्ञान का अध्य

(सोरठा)

जल गंधाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु ।
 सम्यगज्ञान विचार, आठ भेद पूजों सदा ॥
 ॐ हीं अष्टविधसम्यगज्ञानाय अनर्थपदप्राप्तये अध्य निर्वपामीति स्वाहा ।

सम्यकचारित्र का अध्य

(सोरठा)

जल गंधाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु ।
 सम्यक् चारितसार, तेरह विधि पूजों सदा ॥
 ॐ हीं त्रयोदशविधसम्यकचारित्राय अध्य निर्वपामीति स्वाहा ।

पंचमेरु का अध्य

आठ दरबमय अरघ बनाय, 'द्यानत' पूजौं श्रीजिनराय ।
 महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥
 पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमाजी को करहुँ प्रणाम ।
 महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥
 ॐ हीं श्री पंचमेरुसम्बन्धि-अशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्थपदप्राप्तये
 अध्य निर्वपामीति स्वाहा ।

सोलहकारण का अध्य

जल फल आठों दरब चढ़ाय, 'द्यानत' वरत करों मनलाय ।
 परमगुरु हो, जय-जय नाथ परमगुरु हो ॥
 दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थकर पद पाय ।
 परमगुरु हो, जय-जय नाथ परमगुरु हो ॥
 ॐ हीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो अनर्थपदप्राप्तये अध्य निर्वपामीति स्वाहा ।

महाऽर्थ (अदिल्ल॑)

पंच परम परमेष्ठी पूजूँ भाव से।
 उनकी वाणी पूजूँ अधिक उछाह से॥
 रतनत्रयमय परम शुद्ध उपयोग है।
 दश धर्मों से मंडित पावन योग है॥ १ ॥
 गिरि कैलाश महान और पावापुरी।
 सम्मेदाचल गिरनारी चम्पापुरी ॥
 आदि अनेकों सिद्धक्षेत्र मन भावने।
 और अनेकों अतिशय क्षेत्र सुहावने॥ २ ॥
 तीन लोक में थान-थान अति ही घने।
 कृत्रिम और अकृत्रिम चैत्यालय बने॥
 इन सबकी पूजन करता हूँ चाव से।
 और भावना भाता अति उत्साह से॥ ३ ॥
 इन सबकी वंदना करूँ अति चाव से।
 और भावना बारह भाऊँ भाव से॥
 धर्मध्यान शुद्धोपयोग का योग है।
 और परम तप स्वाध्याय संयोग है॥ ४ ॥
 इन सबकी भक्ति पूजन आराधना।
 और आतमा में तन्मय हो साधना॥
 यह सब चाहूँ और न कोई चाह है।
 इन सबमें ही मेरा अति उत्साह है॥ ५ ॥
 (दोहा)

एकमात्र आराध्य है, अपना ज्ञायकभाव।
उसमें तन्मय होय तो, होय विभाव अभाव ॥ ६ ॥

ॐ हीं श्री अरहंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-साधुपंचपरमेष्ठिभ्यो नमः
सम्यगदर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय नमः श्री
सम्मेदशिखर-गिरनारगिरि-कैलाशगिरि-चम्पापुर-पावापुर-आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो
नमः अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः त्रिलोकसम्बन्धी कृत्रिमाकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो नमः
सर्वपूज्यपदेभ्यो नमः महार्थ

१. अपूर्व अवसर ऐसा किस दिन आएगा? की धून पर गायें।

महाऽर्थ

मैं देव श्री अरहंत पूजूँ, सिद्ध पूजूँ चाव सों ।
 आचार्य श्री उवझाय पूजूँ, साधु पूजूँ भाव सों ॥
 अरहन्त भाषित बैन पूजूँ, द्वादशांग रची गनी ।
 पूजूँ दिग्म्बर गुरुचरण, शिवहेत सब आशा हनी ॥
 सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि, दयामय पूजूँ सदा ।
 जजि भावना षोडश रत्नत्रय, जा बिना शिव नहिं कदा ॥
 त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम, चैत्य-चैत्यालय जजूँ ।
 पंचमेरु-नन्दीश्वर जिनालय, खचर सुर पूजित भजूँ ॥
 कैलाश श्री सम्मेदगिरि, गिरनार मैं पूजूँ सदा ।
 चम्पापुरी पावापुरी पुनि, और तीरथ शर्मदा ॥
 चौबीस श्री जिनराज पूजूँ, बीस क्षेत्र विदेह के ।
 नामावली इक सहस वसु जय, होय पति शिव गेह के ॥

(दोहा)

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय ।
 सर्व पूज्य पद पूजहूँ बहु विधि भक्ति बढ़ाय ॥

ॐ हीं श्री अरहन्तसिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो, द्वादशांगजिनवाणीभ्यो
 उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय, दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो, सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यः
 त्रिलोकसम्बन्धीकृत्रिमाकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो, पंचमेरौ अशीतिचैत्यालयेभ्यो, नन्दीश्वर-
 द्वीपस्थद्विपंचाशज्जिनालयेभ्यो, श्रीसम्मेदशिखर-गिरनारगिरि-कैलाशगिरि-चम्पापुर-
 पावापुर-आदिसिद्धक्षेत्रेभ्यो, अतिशयक्षेत्रेभ्यो, विदेहक्षेत्रस्थितसीमधरादिविद्यमान-
 विंशतितीर्थकरेभ्यो, ऋषभादिचतुर्विंशतितीर्थकरेभ्यो, भगवज्जिनसहस्राष्ट्रनामेभ्यश्च
 अनर्थपदप्राप्तये महाऽर्थं निर्वपामीति स्वाहा ।

* * * *